श ग त गद्यम्

श्री मते म नुज नम:

ॆ नत मचु त पद बुज ुगमरुक्म
व मे तस् त दत त मेने!
अस्मत् ग ु ् भगवतेस द ै ग स्नधे:
म नुजस च ै श प्रपद्ये !!

प्र म लक्ष्म मु न: प्रत गह्लतु म मक.
प्रस ध त त्स क्त: स्व ध न प तक श त.

वन्दे वेदन्त कर्प्प च मक क न क.
म नुज म   च म म र्नश

भगवन् न भ मत नु रूप,स्वरूप रूप ग ु वभवैश्व , श ल द्य
अनव धक तश ,असख्ये कल ग ु ग ,पद्म वन ल ,भगवत ,
श्री ,देव ,नत नप न , न वद्य देवदेव दव म श , अ खलजगन् म त ,(अस्मन्
म त) अश श , अनन श :, श म प्रपद्

प म र्थक भगवच्च वन्द ग ैक न्तक,अ त न्तक प भ क्त प ज्ञ न
प मभ क्तकत,प प अनव त नत वशदतम,अनन प्र ेजन,अनव धक तश प्र ,
भगवतनुभव ज नत, अनव धक तश प्र तक त, अशेष वस्त्थ ेचत, अशेष
शेषतैक तरूप,नत कैङ्क प्र प्त पेक्ष , प म र्थक भगवच्च वन्द श ग त:,
थ व स्त्थत अव त स्तु मे!

अस्तु ते! त ै ० स र्० स प त्स ते!

अखल े प्रत न क कल ै कत न, स्०ेत समस्त ०स्तु ०लक्ष , अनन्त ज्ञ न नन्दैक स्०रूप!, स्० भ मत नुरूपैकरूप, अचन्त द० व्द्भुत नत न ०द्य, न तश औज्ज्०ल सौन्द ि, सौगन्ध सौकुम ि ल ० , ै०न द्यनन्त गु न ध, द० रूप!

स्० भ ०कन०तक धश , ज्ञ नबलैश्ठ ि, ० ि श क्त तेजस् सौश ल ०त्सल, म र्द० अर्ज०, सौ र्द स करु , मधु ि ग भ ि औद ि, च तु ि स्थै ि धै ि श ै ि प क्रम, सत क म सत सङ्कल्प, कतत्० कतज्ञत द्य सन्ख्ये ,कल गु ग ै घ म ०!

स्०े चत ० ०ध ० चत्र अनन्त, अश्ठ ि नत न ०द्य, न तश सुगन्ध, न तश सुखस्पर्श, न तश औज्ज्०ल , क मकु च ०तंस, मक कुन ल ग्रै०े क, के क क, श्र ०त्स कौस्तुभ मुक्त द म, उद बन्धन प त ब कन्च गु , नपु द्यप मत, द० भूश !

स्० नुरूप अचन्त श क्त शङ्ख चक्र गद स श र्ङ्गाद् अस्ख े , नत न ०द्य, न तश कल द० धु !

स्० भमत नत न ०द्य नुरूप स्०रूप रूपगु ०भ०ैश्ठ ि, श ल द् न०ध क तश ,अस्ख े कल गु ग श्र ०ल्लभ !

ए०भूत भ म न न क!

स्०च न्द नु०र्त स्०रूप स्थ त प्र० त्भ्द ,अशेष शेषतैक तरूप, नत न ०द्य

न तश इन क्रै९ ेद ,अनन्त कल ग ु ग , शे९शे९ श न, गरु प्रमुख ,नन ठ६ अनन्तप जन प च क प च त, च ु ग !

प म े ग ठ ङ्मनस प च ेद्य स्ठरूप स्ठभ ठ स्ठ भमत, ठ ठ६ ठ चत्र नन्त भ ेग भ ेग पक भ ेगस्त न सम्रुद्ध ,अनन्त अ९ े अनन्त, म ठभठ अनन्तप म , नत न ठद्य न तश श्र ठैकु ठ न थ !

स्ठसङ्कल्प नु ठ६ स्ठरूप स्थ त प्रठ त्त, स्ठशे९तैक स्ठभ ठ, प्रक त पुरुष कल त्मक ठ ठ६ ठ सत्र अ नन्द, भ ेग भ ेक्तठर्ग भ ेग पक , भ ेगस्थ न रूप नखलजगदु द ठभठल ल ल! सत कम! सत सङ्कल्प! प ब्रह्मत! पुरु९ त्तम! म ठभते ! श्र मन्! न ! श्र ठैकु ठ न थ !

अप करु स ैश ल ठत्सल औद े, ऐ९ े स ैन्द े म ेदधे ! अन ले चत ठशे९, अशे९ले क श ! प्र त र्त !अ श्रत ठत्सलैक जलधे !

अनठ त ठदत नखल भत ज त थ त्म ! अशे९च च भत, नखल न मन न त! अशे९ चद चद् ठस्तु शे९भत! नखल जगद ध ! अखल जगत् स्ठ मन्! अस्मत् स्ठ मन्! सत कम! सत सङ्कल्प! सकलेत ठलक्ष ! अर्थ कल्पक!अ पत्सख ! श्र मन् न ! अश श ! अनन श :,त्ठत् प द ठन्दु ग श म प्रपद्ये!

अत्र द्व

"पत मत द न् पुत्र न् बन्धन् सख न् गुरून्
त्न न धनधन न क्षेत्र च ग च

सर्वधर्मा्श्च सत ज , सर्व कामा्श्च स क्ष न्
लोक विक्रान्त च ै, श ते अव्ज वभे "

"त्वमेव म त च पत त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च
गुरुस्त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रव त्वमेव, त्वमेव
सर्व मम देवदेव

पत स लोकस च च स , त्वमस पज श्च गुरु्ग न्
न त्वत् समोस्त भ ध कः कुतो न :, लोकत्रे प प्रत
मप्र भ व"

"तस्म त् प्र प्र ध क , प्रस दो त्व अ म श म ड्य, पतेव पुत्रस सखेव
सख्ुः, प्र : प्र र्स देव सोढु"

मनोवक्के ै:,अन द कल प्रवत्त, अनन्त अकत क कत क , भगवत्पच ,
भ गवत पच , असह्यपच रूप, न न वध अनन्तपच न्, अ ब्ध क र्न्,
अन ब्ध क र्न्, कत न् क म न् क ध म श्च सर्वन्,अशेषत: क्षमस्व!

अन तकल प्रवत्त, वप तज्ञ न,अत्म वष , कत्स्न जगद् वष च,वप तवत्त
च,अशेष वष ,अद्य प वर्तम न वर्तष म च, सर्व क्षमस्व!

मद न द कर्म प्रव प्रवत्त, भगवत् स्वरूप त ध नक ,वप त
ज्ञ नजनन,स्व वष श्च भो ग बुद्धे् जनन ,देो न्द्र त्वेन भोग त्वेन, सक्ष्मरूबे च
अव स्थत ,दैव ग ु म म , "दसभत:, श गध्स्म तव स्म दस:",इत
वक्त , म त !

"तेश इ न न्त ु क्त:, एकभ क्त ् ठ श ष ते
प्र ो इ न न्ते तर्थ, अ स च मम प्र :"

"उद स् सर्ठ एठैते, इ न त्ठ त्मैठ मे मत
अ स्त्थतस् स ु क्त त्म , म मेठ अनुत्तम ग त"

ब ु न जन्म न मन्ते, इ नठ न् म प्रपद्यते
ठ सुदेठस् सर्ठ म त, स म त्म सुदुर्लब:

इ त श्लोक त्र ो दत इ न न म कुरुष्ठ:

"पुरुषस्स प : प तर्थ !, भक्त लभ स् त्ठनन
भक्त त्ठनन श क :, "मद्भक्त लभते प "

इ त स्थ न त्र ो दत, प भ क्त ु क्त म कुरुष्ठ
प भ क्त प इ न, प म भक्तो क स्ठभ ठ म कुरुष्ठ

प भ क्त प इ न प म भ क्तकत, प प र्न ठ त, नत ठ श दतम अनन प्र ोजन, अन्ठ इक तश प्र , भ ग ठतनुभठे ,तथ ठइ भ ग ठदनुभठज नत, अन्ठ इक तश प्र तक त, अशेष ठस्थो चत,
अशेष शेषतैक त रूप, नत कङ्क ो भठ न!

एठभत मत्कैङ्कर्य प्रप्त ु प त अठक्लुप्त, समस्त ठस्तु ठ न प,अनन्त तद्बो इ
प प क्रन्तो प, अनन्त मदपच ु क्तो प,अनन्त मद पच ु क्तो प,अनन्त
असह्यपच ु क्तो प,एतत्क र्क भतन द ठप त अ ङ्क ठमढत्म

स्० भ ० े ए, एतदु भ क ि क ि भतन द ०ए त ० सन सब्धे ए,एतदनुगु
ए्कत ०शेष सब्धे ए,एतन्मल अद्य त्मक अ ध भ ै तक अ ध दै०क, सुख दुःख
तद्धेतु, त द त ेएक्ष , ०ष नुभ० इ न सङ्केसरूए, मच्च ०न्द
ु ग ै क न्तक, (अ त न्तक) ए भ क्त ए इ न, ए म भ क्त ०घ्न
ए्त त े ए, ेनकेन ए ए्क े , द्व ०क्त त्० के०ल मद ै० द , नशेष ०नष्ट
स ेतुक, मच्च ०न्द
ु ग ै क न्तक, अत न्तक ए भ क्त ए इ न, ए म भ क्त ०गन:, मत्स द लभ्ध
मच्च ०न्द ुक ै क न्तक अत न्तक ए भ क्त ए इ न ए म भ क्त:,
मत्स ददे०, स क्ष त् कत, थ ०स्त्थत मत्स्०रूए रूएगु ०भ त, ल ल ेएक
०स्त :, अए ेक्ष सद्ध म इ त , मद्दस ै कस्०भ ०, अत्मस्०रूए:, मदेकनुभ०:,
मद्दस ै कए् :, ए ए ि अन० त, नत ०शदतम अनन ए् ेजन, अन० धक तश
ए् , मदनुभ०स्त्०, तथ ०ध मदनुभ०ज नत,
अन० धक तश ए् तक त, अशेष ०स्थ ेचत, अशेष शेषतैक त रूए, नत गङ्क े
भ०!

ए० भत े स!

अद्य त्मक अ ध भ ै तक, अ धदै०क दुःख ०घ्न
गन्ध तस्त्०, द्व अत्त्थ ि नुसन्ध नेन स ,
सद ए० ०क्त , ०च ए त, अत्रै० श्र इ्ने
सुखम स्०!

श ए त सम े तु के०ल, मत ै० त अतए्बुद्ध:, म मे० अ०ल ेक न,
आएच ुत एर्० सस्क मन े थ:, ज ि म० ०स्र सुखेन इम ए्कत, स्थल सक्ष्मरूए
०सज , तदन मे० मत्स त लब्ध मच्च ०न्त ुक ै क न्तक, अत न्तक
ए भ क्त ए इ न, ए म भ क्त कत ए ए ि न० त, नत ०शतत्म अनन ए् ेजन,

अन्ठ ध्क तश प्र मत्नु भठस्त्ठ,तश ठत,मद्नुभठज न्त, अन्ठ ध्क तश
प्र तक त अशेष ठस्थ्ेचत अशेष शेषतै क तरूप, नत कङ्के भठष स!

मते भद्र सश :!

"अन्त नेक्त पर्ठ मे न च ठक्षे कदचन"

" मे द्वन्र्भठ षदे"

"सकदेठ प्रपन्न , तठ स्म त च चते!
अभ सर्ठ भतेभे, दद एतद् व्रत मम!!"

सर्ठ धर्मन्् प त ज , ममेक श व्रज
अ त्ठ सर्ठ पपेभे, मेक्ष ष म म शुच:"

इत म ै ठ ुक्त!

अतस्त्ठ तठ तत्ठते, मद्ज्ञ न दर्शन प्र प्तषु, नस्सश : सुखम स्ठ!!

अन्त कले स्म त र्तु, तठ कैङ्कर्क त !
त मेन भरठन्द्य, क्र म कुरुष्ठ मे!!